

# स्वामी विवेकानन्द एवं महात्मा गाँधी जी के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन

Pushpendra<sup>1\*</sup> Dr. Amita Kaushal<sup>2</sup>

<sup>1</sup> Research Scholar, Arunodaya University, ITA Nagar, Arunachal Pradesh

<sup>2</sup> Associate Professor, Department of Education, Arunodaya University, Itanagar, Arunachal Pradesh

सार – स्वामी जी व गाँधी जी दोनों ही भारतीय चिंतक हैं। इस लघु शोध में हमने दोनों चिंतकों के शैक्षिक दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन किया है। इसमें हमने दोनों चिंतकों के शैक्षिक विचारों का विस्तार वर्णन किया है। इसमें हमने समय की कमी के कारण इनके शैक्षिक दर्शन को लिया है तथा इसके लिए हमने ऐतिहासिक व वर्णनात्मक विधि का उपयोग किया है। हमने आज के परिपेक्ष में इन दोनों संतों के शैक्षिक विचार का क्या योगदान है शिक्षा में इसका अध्ययन किया है। स्वामी विवेकानन्द इस युग के पहले भारतीय थे जिन्होंने हमें हमारे देश की आध्यात्मिक श्रेष्ठता और पाश्चात्य देशों की भौतिक श्रेष्ठता से परिचित कराया और हमें अपने भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार के विकास के लिए सचेत किया। इन्होंने उद्घोष किया कि भारत के प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षित करो और शिक्षा द्वारा उसे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कुशलतापूर्वक कार्य करने के लिए सक्षम करो, उसे स्वावलम्बी बनाओ, आत्मनिर्भर बनाओ, स्वाभिमानी बनाओ और इन सबसे ऊपर एक सच्चा मनुष्य बनाओ जो मानव सेवा द्वारा ईश्वर की प्राप्ति में सफल हो। स्वामी विवेकानन्द जी को भारत के अतीत और वर्तमान के बीच एक बहुत बड़ा संयोजक माना जाता है।

-----X-----

## प्रस्तावना

वर्तमान विश्व में राष्ट्रीयता, समाजवाद और विश्वशांति के तत्त्वहावी हैं। विश्व के प्रायः सभी राष्ट्र, राष्ट्रीयता के धागे से बंधे हैं। अधिकांश राष्ट्रों में समाजवाद की धारा उन्मुक्त बह रही है। पर दूसरी ओर आज सारा विश्व उद्धत -विनाशकारी आतंकवाद की चपेट में है। ऐसी दशा में प्रायः सभी शांतिप्रेमी राष्ट्र समूचे विश्व में शांति के लिए अपनी-अपनी सीमाओं में प्रयासरत हैं। सही भी है, बिना विश्व जनीन शांति के कोई भी राष्ट्र वांछित प्रगति नहीं कर सकता। यही कारण है कि आज के विश्व में एक ओर तो राष्ट्रीयता का नारा बुलंद हो रहा है, तो दूसरी ओर समाजवाद का सामाजिकतावादी प्रवृत्ति आज के संसार में प्रायः विश्वव्यापी है। उधर टूटे-बिखरे साम्यवाद के कारण भी इसका परचम बढ़कर विश्व में लहरा रहा है। किन्तु क्लेश हैं-आज का सारा परमशक्तिशाली राष्ट्रमंडल भी आतंकवादी संगठनों की घृणित करतूतों से न केवल आतंकित है, अपितु यह शांति प्रयासों की सफलता के प्रति प्रश्नचिन्हित भी है।

शिक्षा भी देश -काल -परिस्थिति सापेक्ष होती है। क्योंकि परिवर्तन प्रकृति का नियम है। अतएव, शिक्षा की धारा भी परिवर्तन का विषय बनती रहती है। परिवर्तन की इसी प्रवृत्ति का ही परिणाम है कि आज की शिक्षा विश्वशांति के तत्त्वों से विशेष प्रभावित है। बिना इनसे सामंजस्य बिठाए अथवा इनके संगठन - संरक्षण -सम्प्रसार के कार्य किये बिना वह भी हाशिए पर चली जाएगी। यही कारण है कि आज की शिक्षा के विचारणीय बिंदुओं में, बिंदुओं की उक्तत्रयी केन्द्रस्थ है।

भारतीय संविधान के प्रावधान भी प्रजातांत्रिकता, धर्मनिरपेक्षता, राष्ट्रीयता, अखण्डता, समाजवादी दर्शन, समानता, भ्रातृत्व और शांति के संरक्षण-सम्प्रसार-व्यवहार का न केवल अभिकथन करते हैं, अपितु इनकी रक्षा के लिए राष्ट्र की प्रतिबद्धता भी उजागर करते हैं।

आज का हमारा देश जिस त्रासदी से गुजर रहा है, उसने राष्ट्रकल्याण से संवेदित मानस में यह प्रश्न उभार दिया है कि क्या स्वतंत्रता-प्राप्ति के बीते दशकों के उपरान्त भी जो लक्ष्य हमारे संविधान, निर्माताओं ने अवधारित किए थे, वे कहीं स्वप्न ही होकर तो नहीं रह गए हैं, इन संजोए स्वप्नों

की साकारता शिक्षा-व्यवस्था करती है, करेगी। वर्तमान दशाओं के परिप्रेक्ष्य में इस त्रासदी से अगर मुक्ति लेना है, तो हमें निश्चय ही राष्ट्रीयता मंडित, समाजवादी विचारधारा से ओतप्रोत, और विश्वशांति-उन्मुखी शिक्षा का सहारा लेना पड़ेगा।

स्वामी विवेकानन्द इस बिन्दुत्रयी के न केवल आधुनिक काल के प्रधान उद्गावक थे, अपितु इन प्रवृत्तियों के महान सम्प्रचारक और व्यावहारिक प्रयोक्ता भी थे। स्वामी जी ने भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व को समाजवाद और विश्वशांति का दिव्य पाठ पढ़ाया, अपने सुन्दर आकर्षक व्यक्तित्व से विश्व को सम्मोहित किया, साथ ही अपने व्यक्तित्व कृतित्व से भारतवर्ष को पुनः जगत् गुरु के रूप में प्रदर्शित किया।

स्वामी विवेकानन्द, शिक्षा द्वारा, भारत में ऐसे धर्म का व्यवहार चाहते थे, जिससे मनुष्य का निर्माण हो, ऐसी शिक्षा के समर्थक थे जिससे सभी का सम्पूर्ण विकास हो, जिससे हम शारीरिक बौद्धिक अथवा आध्यात्मिक दृष्टि से कमजोर न हो सकें। राष्ट्र के सम्बलन के लिए वे “एसे नव-युवकों का निर्माण चाहते थे जिनमें लोहे जैसी शक्ति हो, स्वस्थ मस्तिष्क हो, भारतवासियों के प्रति बिना भेदभाव के प्रेम हो, एक दूसरे के प्रति विश्वास हो, देश के प्रति बलिदान की भावना हो, सहनशक्ति हो, गरीबों एवं असहायों के प्रति सहानुभूति हो।

स्वामी जी की दृष्टि में जीवन में मानवीय संवेदना का बड़ा महत्व रहा। उनमें यह विशेषता कूटकूटकर भरी थी। उन्होंने उच्चवर्ग के द्वारा निम्न वर्ग की उपेक्षा तथा उनके साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार का विरोध किया तथा उन्हें उचित सम्मान देने की बात की। उनके ही शब्द हैं- आओ हममें से प्रत्येक दिन और रात उन करोड़ों पददलित भारतीयों के लिए प्रार्थना करें, जो गरीबी, पुरोहितों के छल और नाना अत्याचार द्वारा जकड़े हुए हैं, उन्हीं के लिए दिन-रात प्रार्थना करो।

उनका युवकों के लिए संदेश रहा-नीच व्यक्ति की सेवा करके ही श्रेष्ठ विद्या सीखने का प्रयत्न करो। चण्डाल द्वारा भी श्रेष्ठ धर्म की शिक्षा ग्रहण करो, देश और समाज के कल्याण के लिए आत्मोत्सर्ग करना सीखो, जीवन की अवधि अल्प है, परमात्मा अजर, अमर, अनन्त है और मृत्यु अनिवार्य है, इसलिए आओ हम अपने आगे एक महान आदर्श खड़ा करें और उसके लिए अपना जीवन उत्सर्ग कर दें।

सहने की आवश्यकता नहीं - इससे बेहतर और बड़े समाजवाद की बात क्या हो सकती है? स्पष्ट है कि स्वामी जी ने आजीवन अपनी कथनी - करनी से समाजवाद की पूर्ण प्रतिष्ठा की।

विवेकानन्द जी शिक्षा का अन्तिम लक्ष्य विश्वबन्धुत्व का विकास मानते हैं। उनका मत रहा- वेद सर्वे भवन्तु सुखिनः की बात करता है, अतएव, हमें पूरे जगत् के हित की चिन्ता करनी चाहिए। पूरब-पश्चिम का भेद अन्यायपूर्ण है, पूरब में जहाँ आध्यात्मिकता की जड़ है, वहाँ पश्चिम में भौतिकता की। हमें, विकास के लिए दोनों की आवश्यकता है। स्वामी जी की स्पष्ट मत रहा -

गांधी दर्शन आज केवल भारत ही नहीं वरन् समस्त विश्व समुदाय को मानव केन्द्रित विकास की ओर अपना ध्यान आकृष्ट करने को बाध्य कर रहा है क्योंकि अंधाधुंध विकास की मरीचिका में फंस कर हमने वस्तुओं में निवेश किया, मनुष्य में नहीं। सभ्यता के प्रारम्भ से ही शिक्षकों और दार्शनिकों ने व्यक्तित्व की श्रेष्ठता और प्रतिभा को महत्वपूर्ण माना है। गांधीजी का शिक्षा में योगदान अद्वितीय है। वह पहले भारतीय थे जिन्होंने भारतीय संस्कृति और सभ्यता के आवश्यक मूल्यों के आधार पर शिक्षा की एक योजना की वकालत की। उनके द्वारा बताए गए तरीकों और तकनीकों और उनके द्वारा निर्धारित पर्यावरण ने भारतीय सोच और जीने के तरीके में क्रांति ला दी।

वह अभ्यास करने के लिए अपने आदर्शों और मूल्यों का अनुवाद करना चाहते थे। शिक्षा का उनका दर्शन आदर्शवाद, प्रकृतिवाद और व्यावहारिकता का सामंजस्यपूर्ण सम्मिश्रण है। यह ध्यान दिया जा सकता है कि तीन दर्शन के बीच कोई अंतर्निहित संघर्ष नहीं है। आदर्शवाद गांधीजी के दर्शन का आधार है जहाँ प्रकृतिवाद और व्यावहारिकता उस दर्शन को व्यवहार में अनुवाद करने में सहायक हैं। गांधीजी ने आत्म-साक्षात्कार के अंतिम सत्य को प्राप्त करने के लिए आदर्श सत्य अहिंसा और नैतिक मूल्यों की वकालत की। वह प्रकृतिवाद का एक भक्त है जब वह अपने स्वभाव के अनुसार बच्चे के विकास के बारे में बोलता है और वह एक व्यावहारिक व्यक्ति बन जाता है जब वह अनुभव से सीखने और करने की वकालत करता है। यह सब एकीकरण की ओर जाता है, इसलिए कुल व्यक्तित्व के प्रभावी शिक्षा और विकास के लिए आवश्यक है।

महात्मा गाँधी ने भारत के प्रत्येक भाग में भ्रमण कर हर क्षेत्र की ज्वलन्त समस्याओं को जान व समझ लिया था। वैज्ञानिक, औद्योगिक एवं तकनीकी विकास एवं उसकी उपलब्धियों का ज्ञान प्राप्त कर लिया था तथा यह अनुभव कर रहे थे कि किसी भी राष्ट्र की उन्नति एवं विकास इस बात पर निर्भर है कि वहाँ की सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं आर्थिक क्रिया कलापों में सभी नागरिकों की उचित

भागीदारी हो, यह भागीदारी तभी संभव है जब नागरिक शिक्षित हो। प्रजातांत्रिक प्रणाली के सुचारु संचालन और अपेक्षित सफलता के लिए भी आवश्यक है कि शिक्षा के द्वारा जिम्मेदार नागरिक तैयार किए जाएं। जब तक मानव चिन्तन को संकुचित दायरे से निकाल कर विस्तृत नहीं किया जाता तब तक आधुनिक भारत का निर्माण असम्भव है, और साथ ही उन्हें वैज्ञानिक एवं औद्योगिक उन्नति की प्रविधि का ज्ञान भी न होगा तथा इसके अभाव में भारत की पुनर्रचना का संकल्प व कार्य सम्पन्न न हो सकेगा। इसलिये वे अंधविश्वास, आछूत, वर्ग-भावना, जाति-भावना, घनी निधन के द्रवैत भाव को समाप्त करने में जीवन भर प्रयत्न करते रहे हैं।

### अध्ययन के उद्देश्य

1. महात्मा गाँधी एवं स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों के विश्लेषण के स्वरूप का प्रस्तुतीकरण।
2. ग्रन्थों के आधार पर महात्मा गाँधी एवं स्वामी विवेकानन्द के दार्शनिक विचारों का अध्ययन करना।

### महात्मा गाँधी और स्वामी विवेकानन्द की दार्शनिक विचार धारा की पृष्ठभूमि

महात्मा गाँधी की दार्शनिक विचार धारा को आधुनिक युग में गाँधीवाद के नाम से पुकारते हैं। विभिन्न प्रतिष्ठानों द्वारा इस गाँधीवादी विचारधारा का प्रसार किया जाता है। परन्तु वास्तविकता यह है कि गाँधी जी ने किसी वाद का प्रचार किया ही नहीं। जहाँ वाद होता है, वहाँ विवाद भी होता है। परन्तु गाँधी जी के जीवन में कोई विवाद हुआ ही नहीं। उसमें सत्य को प्राप्त करने का प्रयत्न है।

गाँधी जी ने कभी नहीं कहा कि मैंने सत्य प्राप्त कर लिया है वह यही कहते रहे कि मैं सत्य को प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहा हूँ। जहाँ प्रयत्न है, वहाँ सिद्धान्त या वाद नाम की चीज नहीं आ सकती। इसलिए गाँधीजी की विचारधारा को गाँधीवाद के नाम से पुकारना उचित नहीं है।

गाँधी जी ने बड़े स्पष्ट शब्दों में लिखा था, “मैं इस बात का दावा नहीं करता कि मैंने किसी नये सिद्धान्त को जन्म दिया है। मैंने केवल शाश्वत सत्य को अपने ढंग से जीवन में तथा उससे सम्बन्धित समस्याओं को हल करने में अपनाया है। मेरा सारा दर्शन, यदि उसे दर्शन की संज्ञा दी जाय, उसमें निहित है जो कुछ मैंने कहा है। आप उसे गाँधीवाद न कहें, क्योंकि उसमें कोई श्वाद” नहीं है।

महात्मा गाँधी ने अपने विचारों को मौलिक नहीं बतलाया। विभिन्न ग्रन्थों के पढ़ने, समझने, मनन करने आदि से गाँधी जी के जो विचार स्पष्ट होते हैं, उनका अध्ययन ही हम गाँधी दर्शन के अन्तर्गत कर सकते हैं। गाँधीवाद संसार से विरक्त रहकर अध्यात्म का चिन्तन करने वाला दर्शन नहीं है। अध्यात्म संसार के क्रिया-कलापों में ही समाया हुआ है।

गाँधी जी सच्चे कर्मयोगी थे और दार्शनिक गुणधर्मों में उलझने के बजाय जीवन में कार्य को अधिक महत्व देते थे। वे एक सफल राजनीतिज्ञ, महान समाजसेवी, उच्च कोटि के आर्थिक नियोजनकर्ता थे। यही कारण है कि उनके दार्शनिक विचारों का अध्ययन तीन रूपों में किया जाता है

- आध्यात्मिक एवं नैतिक विचार
- सामाजिक एवं आर्थिक विचार
- शैक्षिक विचार।

### आध्यात्मिक एवं नैतिक विचार:

इसके अन्तर्गत गाँधीवाद को शुद्ध रूप से जीव, जगत और ईश्वर आदि से सम्बन्धित दार्शनिक विचारों का अध्ययन किया जाता है। जो इस प्रकार निम्नवत् हैं

#### 1. सत्य

गाँधी जी सत्य तथा सत् में घनिष्ठ सम्बन्ध मानते हैं। सत् का अर्थ अस्तित्व होता है, और सत्य का वास्तविकता। गाँधी जी सत्य शब्द को सत् से बना हुआ मानते हैं और कहते हैं कि सत्य का सच्चा शुद्ध ज्ञान स्वयमेव समाया हुआ है। गाँधी जी सत्य को जीवन का एक अंग मानते हैं। उनके जीवन दर्शन का सर्वश्रेष्ठ तत्व सत्य है। वे सत्य में शिवम् और सुन्दरम् को निहित मानते हैं, और कहते हैं कि सत्य और ईश्वर में कोई भी अन्तर नहीं है। गाँधी जी ने सत्य को चार अर्थों में ग्रहण किया है

- कल्याण रूप में।
- दान, तप और यज्ञ आदि में दृढ़ता के रूप में।
- संकल्प शक्ति के रूप में।
- भले कार्य के रूप में।

इससे स्पष्ट है कि गाँधी जी सत्य का रूप अत्यन्त व्यापक मानते हैं। वे सत्य का अर्थ केवल सच बोलना ही नहीं मानते,

बल्कि सत्य जीवन में चलने का एक ढंग है, वहीं संसार में सब कुछ है। वह एक है, और वही ईश्वर है। उनके अतिरिक्त संसार में कुछ नहीं है। यदि कोई व्यक्ति मन, कर्म और वचन में सत्य का प्रयोग करता है तो वह ईश्वर को प्राप्त कर सकता है।

गाँधीजी ने अपनी आत्मकथा में अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि- इस जगत में जहाँ ईश्वर कहिये, उसके सिवा दूसरा कुछ भी निश्चित नहीं है। वहाँ निश्चितता का ख्याल करना ही गलत मालूम पड़ता है। यह सम्पूर्ण वस्तु व्यापार जो अपने आस-पास दिखाई देता और हो रहा है, अनिश्चित है क्षणिक है, उसमें एक परम तत्व निश्चित रूप से अन्तर्निहित है। सत्य एक विशाल वृक्ष है। उसे ज्यों-ज्यों से या जाय त्यों-त्यों उसमें अनेक फल आते दिखाई देते हैं। उसका अन्त नहीं होता। ज्यों-ज्यों उसकी गहराई में पहुँचिये, त्यों-त्यों रत्न मिला करते हैं।<sup>1</sup> इस प्रकार सत्य रूपी साधन से ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है, और यही हमारे जीवन का लक्ष्य है। सत्य का अर्थ वाणी अथवा वचन तक सीमित नहीं है, उसका क्षेत्र विस्तृत है। इसका प्रयोग जीवन के प्रत्येक पहलू में होना चाहिए, स्वयं गाँधी जी का जीवन सत्य के लिए एक प्रयोग है।

## 2. ईश्वर

महात्मा गाँधी अपने जीवन की अन्तिम घड़ी तक राम का नाम जपते रहे। परन्तु ईश्वर को वे केवल सगुण रूप में कल्पना नहीं की। वे ईश्वर को निराकार मानते हुए कहते हैं कि, मैं सगुण ईश्वर में विश्वास नहीं करता, जिस रूप में हम लोग व्यक्ति रूप प्राणी हैं, मैं ईश्वर को विश्वविधान रूप में देखता हूँ 2 मैं ईश्वर को सृजनकर्ता और असृजनकर्ता मानता हूँ ईश्वर एक है और बहुत भी है, वह परमाणु से भी अधिक सूक्ष्म है और हिमालय से भी अधिक विशाल है। मैं ईश्वर को सत्य और प्रेम मानता हूँ, ईश्वर नैतिकता है। ईश्वर निर्भीकता है, ईश्वर प्रकाश और जीवन का स्रोत है। ईश्वर अन्तरचेतना है। ईश्वर नास्तिक की नास्तिकता है। वह वाणी और तर्क में अवतरित है। वह विश्व का शुद्धतम सार है। वह केवल उनके लिए है, जो उसमें विश्वास करते हैं। वह निरन्तर कष्टमय जीवन से ओत-प्रोत है। वह धैर्यशाली है और भयावह भी। वह जनतन्त्र का सबसे बड़ा समर्थक है, जिसे आज तक संसार समझ सका है क्योंकि वह हमें अच्छाई और बुराई में कुछ भी चुनने की स्वतंत्रता प्रदान करता है।

वह अत्यन्त क्रूर भी है, क्योंकि कभी-कभी हमारे मुंह का ग्रास भी छीन लेता है और स्वेच्छा की आड़ में कभी-कभी हमें इतना अवसर देता है कि वह हमारे कष्टों का मजाक उड़ाता है।

इसलिए हिन्दू लोग इसे भगवान का खेल, लीला या माया की संज्ञा देते हैं।

महात्मा गाँधी के उक्त कथनों से स्पष्ट झलकता है कि वे ईश्वर के संसृष्ट रूप को मानते हुए निराकार ब्रह्म की ओर झुके हैं। वे ईश्वर की एकता में विश्वास करते हैं, और उसी प्रकार सम्पूर्ण मानव जाति की एकता में भी। उनके अनुसार षड्ससे क्या कि हमारे शरीर भिन्न-भिन्न हैं, लेकिन हमारी आत्मा तो एक है। सूरज की किरणें भी अनेक हैं लेकिन उनका स्रोत तो एक ही है। गाँधी जी मानते हैं कि ईश्वर एक है, सनातन है, निरालम्ब है, अज है, अद्वितीय है, सृष्टिकर्ता है, उसे किसी ने पैदा नहीं किया। ईश्वर को उन्होंने प्रेम भी कहा है और ईश्वर की आवाज को अन्तःकरण की आवाज माना है, जो प्रत्येक व्यक्ति में वर्तमान है, जिससे सुनने के लिए तैयारी की आवश्यकता है। इस प्रकार ईश्वर अन्तःकरण की अनुभूति है।

## 3. आत्मा

महात्मा गाँधी आत्मा को प्रत्येक जीव का आधार मानते थे। अद्वैतवादी विचारधारा के अनुसार ही गाँधीजी का भी यह विचार है कि आत्मा ब्रह्म (परमतत्व) में एकीकृत हो जाती है। वे कठोपनिषद् की बातों में विश्वास रखते थे, जिसमें शरीर रूपी रथ में आत्मा योद्धा के समान है, बुद्धि सारथी है, मन लगाम है, इन्द्रियाँ घोड़े हैं और शब्द रस, गन्ध, स्पर्श ये क्षेत्र हैं। इस प्रकार आत्मा इन्द्रिय, मन एवं बुद्धि के साथ कार्य करता है। इसी आधार पर उन्होंने समाज में सभी आत्माओं को एक समान मानकर अन्तिम लक्ष्य ब्रह्म से एकता स्थापित करना माना था। इसी विचार के आधार पर उन्होंने राष्ट्रीय एकता एवं विश्वबन्धुत्व पर जोर दिया।

## 4. जगत

गाँधी जी जगत् को वास्तविक मानते थे। उनके अनुसार संसार का त्याग करना उचित नहीं है। उन्हीं के शब्दों में, संसार प्रत्येक क्षण परिवर्तित होता रहता है, इसलिए यह सत्य नहीं है। इसका कोई स्थायी अस्तित्व नहीं माना जा सकता। किन्तु निरन्तर परिवर्तित होते हुए भी इसमें कुछ सार सदैव रहता है। अतः उसी अंश अथवा सीमा तक यह वास्तविक अवश्य है।

## 5. अहिंसा

महात्मा गाँधी सत्य को लक्ष्य और अहिंसा को उसका साधन मानते हैं। उन्होंने अहिंसा को सर्वशक्तिमान, अनन्त तथा ईश्वर का पर्याय बताया है। उनका कथन है कि, अहिंसा का

जवाहरात को सत्य के लिए संघर्ष करने की खोज में प्राप्त हुआ है।

अहिंसा उनके जीवन दर्शन का महत्वपूर्ण तत्व है। उनके कथनानुसार अहिंसा का अर्थ समस्त जीवधारियों के प्रति प्रेम एवं सहयोग की भावना से है। उनके विचारानुकूल सभी प्राणियों के प्रति अच्छी भावना होनी चाहिए। उनकी अहिंसा सभी से प्रेम करने की और कष्ट सहने की प्रेरणा देती है। गाँधी जी प्रेम को अहिंसा का विकसित रूप मानते हैं। अहिंसा का अभिप्राय है, विरोधी के प्रहार को हँसते-हँसते सह लेना और उसके विरोध के बावजूद उसे प्रेमपूर्वक गले लगाने के लिए तैयार रहना। गाँधीजी सत्य को साध्य और अहिंसा को साधन मानते थे। सत्य और अहिंसा एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, इन्हें एक को दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता है।

## सामाजिक एवं आर्थिक विचार

महात्मा गाँधी के समाज, स्त्री-पुरुष, श्रम पूँजी, औद्योगीकरण, मशीनीकरण एवं आर्थिक समानता सम्बन्धित विचारों को उनके सामाजिक एवं आर्थिक जीवन-दर्शन की संज्ञा दी जाती है। इस दर्शन की मूल विशेषताएँ निम्नलिखित हैं

### 1. समाज की कल्पना

महात्मा गाँधी ने आदर्श समाज की कल्पना करते हुए 10 दिसम्बर 1921 ई0 को यंग इण्डिया में लिखा था, कि - मैं ऐसे भारत के निर्माण के लिए कार्य करूँगा, जिसमें गरीब से गरीब भी यह गौरव अनुभव करें कि निर्माण में उसका भी हाथ है। मैं ऐसे भारत की रचना चाहूँगा जिसमें ऊँच-नीच का भेदभाव न हो। वह भारत ऐसा होगा जिसमें सभी वर्ग प्रेम से रह सकें। ऐसे भारत में छुआछूत और मद्यपान एवं नशीली वस्तुओं के सेवन हेतु कोई स्थान नहीं होगा। स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकार होंगे। सभी देशों से मित्रता रखने के कारण हम विश्व के देशों के साथ शान्तिपूर्वक रह सकेंगे। हम न किसी का शोषण करेंगे और न कोई हमारा शोषण करेगा। हमारे देश में कम से कम से ना रहेगी। करोड़ों की संख्या में मूक जनता के हितों का ध्यान रखा जायेगा। व्यक्तिगत रूप से मैं देशी और विदेशी के भेद को घृणा की दृष्टि से देखता हूँ मेरी कल्पना का भारत यहीं है।

इससे स्पष्ट है कि गाँधी जी ऐसे समाज की कल्पना करते थे, जिसमें किसी भी प्रकार का शोषण न हो। गाँधी जी ने स्पष्ट शब्दों में कहा था, वर्तमान जाति प्रथा, वर्ण व्यवस्था के एकदम विपरीत है। जितनी ही शीघ्र जनता इसका नाश करे, उतना ही अच्छा है- जाति का धर्म कोई प्रयोजन नहीं। यह आध्यात्मिक तथा राष्ट्रीय विकास और प्रगति के लिए हानिकारक है। ऐसे

समाज की रचना का आधार सत्य, अहिंसा, प्रेम तथा न्याय होगा। व्यक्ति की जाति उसकी कार्यकुशलता के आधार पर ही निश्चित होगी।

### 2. समाज में स्त्री तथा पुरुष का स्थान:

महात्मा गाँधी समाज में स्त्री और पुरुष को बराबरी का दर्जा देने के पक्षपाती थे। उनका कथन था कि स्त्री और पुरुष एक दूसरे के पूरक हैं और दोनों को अपनी जन्म, जाति, प्रकृति के अनुसार अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिए। स्त्रियों का कार्य, पुरुषों से कम महत्वपूर्ण नहीं है, अतएव उन्हें पुरुषों की प्रवृत्ति को न अपनाकर अपने ही कार्य को सुचारू रूप से करना चाहिए।

गाँधी जी कहा करते थे, अपने घर को सुव्यस्थित रखने में उतनी ही बहादुरी है, जितना उसको बाहरी आक्रमण से बचाने में।

गाँधी जी आध्यात्मिक, सामाजिक, राजनीतिक क्षेत्र में स्त्रियों और पुरुषों को बराबरी का अधिकार देने के पक्षपाती थे। वे उन प्रथाओं के प्रबल विरोधी थे, जो स्त्रियों के समुचित विकास में बाधक थीं। गाँधी जी गृहस्थ जीवन को ही सर्वश्रेष्ठ जीवन मानते थे, और उनके अनुसार विवाह एक स्वाभाविक अथवा प्राकृतिक क्रिया थी।

### 3. श्रम की महत्ता

गाँधी जी यह आवश्यक समझते थे कि प्रत्येक व्यक्ति को आर्थिक समानता के लिए श्रम का मूल्य समझे। गाँधी जी कहते थे कि प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं अपनी सफाई करने वाला होना चाहिए। उनके अनुसार कोई भी कार्य हेय नहीं है। मोटे और गन्दे कार्य करने वाला दिमागी कार्य करने वाले से कम महत्व नहीं रखता। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी रोटी कमाने भर का श्रम अवश्य करना चाहिए। गीता में कहा गया है, जो व्यक्ति बिना श्रम किये भोजन करता है, वह चुराया हुआ भोजन खाता है। श् गाँधी जी इसी सिद्धान्त को अपने जीवन में चरितार्थ करना चाहते थे।

### 4. औद्योगीकरण

महात्मा गाँधी जी कुटीर उद्योगों के समर्थक थे किन्तु जहाँ श्रमिकों की कमी हो वहाँ वे औद्योगीकरण के पक्षधर थे। उनका मानना था कि भारत जैसे देश में जहाँ कि जनसंख्या अत्यधिक है, बड़े-बड़े उद्योगों की आवश्यकता यहाँ नहीं है। ये बड़े-बड़े उद्योग बेरोजगारी को बढ़ावा देते हैं। औद्योगीकरण की प्रवृत्ति जनता में अनेक बुराइयों को जन्म

देती है। मनुष्य यान्त्रिक दासता में जकड़ता जाता है और उसका नैतिक पतन होता जाता है।

## 5. श्रम और पूँजी

गाँधी जी श्रम को पूँजी से अधिक महत्व प्रदान करते थे। उनका कथन था कि एक मजदूर, एक पूँजीपति की अपेक्षा कम महत्व नहीं रखता बल्कि उसका महत्व पूँजीपति से अधिक है। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि गाँधी जी मजदूरों को पूँजीपतियों के विरुद्ध भड़काने का प्रयास करते थे। वे कहते थे कि जहाँ हिंसा और घृणा है, वहाँ आदर्श समाज की स्थापना नहीं हो सकती। अतः मजदूरों को पूँजीपतियों से घृणा नहीं करनी चाहिए।

## उपसंहार

दर्शन का अर्थ है ज्ञान के प्रति प्रेम अर्थात् वे व्यक्ति जो ज्ञान के प्रति प्रेम रखते हैं तथा कभी भी संतुष्ट नहीं होते हैं दार्शनिक कहलाते हैं आज तक जितने भी शिक्षा शास्त्री हुए हैं वो दार्शनिक भी हुए हैं अतः शिक्षा व दर्शन का अटूट सम्बन्ध है तथा ये एक ही सिक्के के दो पहलू हैं उन्हें अलग नहीं किया जा सकता है। दर्शन जीवन के उद्देश्य निर्धारित करता है जिनको शिक्षा के द्वारा पूर्ण किया जाता है। अतः शिक्षा के सभी पहलुओं पर दर्शन का प्रभाव पड़ता है। गाँधी व स्वामी जी के शैक्षिक विचारों के तुलनात्मक अध्ययन में पाया है कि दोनों ने आध्यात्मिकता पर बल दिया है। नैतिक चरित्र पर बल दिया है। दोनों के अनुसार शिक्षक एक दार्शनिक व निर्देशक हैं। इनके अनुसार शिक्षार्थी आज्ञाकारी ब्रह्मचारी व श्रम करने वाला होना चाहिए। शिक्षण विधियों में करके सीखना व अनुभव से सीखना आदि दी हैं। अनुशासन में दोनों ने ही आत्मानुशासन की बात कही है। पाठ्यक्रम दोनों के अनुसार ही आध्यात्मिक व भौतिक दोनों पाठ्यक्रमों होने चाहिए। दोनों ने ही नारी शिक्षा, समाज शिक्षा और व्यवसायिक शिक्षा पर काफी बल दिया है।

## सन्दर्भ

1. आचार्य एवं त्रिपाठी, अन्य भारतीय दर्शन विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 2011।
2. एस. राधाकृष्ण महात्मा गाँधी और सामाजिक न्याय, प्रकाशन गाँधी स्मृति एवं दर्शन नई दिल्ली-11
3. गुप्त, राम बाबू भारतीय शिक्षा का इतिहास सामाजिक विज्ञान प्रकाशन, कानपुर, 2014।

4. गाँधी, मोहनदास करमचंद, सत्याग्रह, गाँधी साहित्य प्रकाशन, इलाहाबाद, 2012।
5. पाठक, पी. डी., भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 2010।
6. बालिया, जे. एस., शिक्षा के सिद्धांत तथा विधियां, पाल पब्लिशर्स, जालन्धर, 2014।
7. मिश्र, रमेश, भारतीय दर्शन, हिन्दी समीति सूचना विभाग, लखनऊ, 2010।
8. मिश्र, आत्मानंद, भारतीय शिक्षा के प्रवर्तक, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 2012।
9. लाल रमण बिहारी, शिक्षा के दार्शनिक तथा समाज शास्त्रीय सिद्धान्त, 2010।
10. लाल रमण बिहारी, शिक्षा सिद्धांत, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ, 2013।
11. शर्मा, मंजु, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, कामसिफल पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली, 2010।
12. शर्मा, राम, गाँधी मानव रूप में, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013।

## Corresponding Author

### Pushpendra\*

Research Scholar, Arunodaya University, ITA Nagar, Arunachal Pradesh